औलिया अल्लाह

30

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है। सब तअरीफें अल्लाह तआला के लिए हैं। हम उसी का शुक्र अदा करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि पर।
व बअद!

वलायत अदावत की ज़िद है। वलायत मुहब्बत और कुर्ब को कहा जाता है और अदावत गुस्से और दूरी को। यानि वलायत के मआनी दोस्ती के हैं और वली का मतलब दोस्त होता है और औलिया वली की जमाअ (बहुवचन) है।
कोई जब उस बात का जो अल्लाह को पसन्द हो हुक्म दे और उस बात से जिसे अल्लाह ना पसन्द करता है मना करे तो ऐसा शख़्स अल्लाह का वली कहलाता है और ऐसे शख़्स का दुश्मन अल्लाह का दुश्मन होता है। इर्शादे बारी तआला है। ''जिसने मेरे दोस्त से दुश्मनी की उसने मेरे खिलाफ़ ऐलाने जंग किया।'' (मुम्तहिनः– आयत–01)

औलिया अल्लाह के औसाफ़ (खूबियां)

''याद रखो! जो अल्लाह के वली (दोस्त) हैं। क़यामत के दिन न तो उन्हें डर होगा और न कोई गम। (ये वोह लोग हैं) जो ईमान लाए और परहेज़गार (मुत्तक़ी) रहे।'' (युनुस–आयत–62–63) अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है ''जिसने मेरे दोस्त से दुश्मनी की उसने मेरे साथ जंग का ऐलान किया। जब मेरा बन्दा वोह फ़राइज़ अदा करता है जो मैंने फ़र्ज़ (ज़रूरी) किया है और फिर नवाफ़िल के ज़रिये मेरी कुरबत हासिल करता जाए। यहां तक कि मेरे अन्दर उसके लिए मुहब्बत पैदा हो जाए तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, उसकी आंख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है। उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है। उसका पांव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है। वह बन्दा अब मुझसे जो मांगता है मैं उसे देता हूँ। मेरी पनाह चाहता है तो पनाह देता हूँ। मै उस बन्दे को तक्लीफ़ देना पसन्द नहीं करता।'' (बुखारी–6502)
(कुल मिला कर यह कि) अल्लाह के औलिया वो होते है जो अल्लाह पर ईमान लातें है , उससे मुहब्बत करते हैं। उस बात को पसन्द करते हैं जिसे अल्लाह पसन्द करता है और जो बात अल्लाह को नापसन्द है वो भी उसे पसन्द नहीं करते। जिस चीज़ से अल्लाह राज़ी होता है वो भी राज़ी होते हैं और जिससे अल्लाह नाराज़ होता है वो भी नाराज़ होते हैं। जिस बात का अल्लाह हुक्म देता है वो भी उसी का हुक्म देते हैं और जिससे अल्लाह मना करता है वो भी मना करते हैं। जैसा कि नबी सल्ल. का इर्शाद है'' ईमान का सबसे मज़बूत दस्ता यह है कि किसी से अल्लाह ही के लिए मुहब्बत की जाए और अल्लाह ही के लिए दुश्मनी की जाए। ''(मुसनद अहमद, तबरानीकबीर (हसन) और ''जिसने अल्लाह के लिए मुहब्बत की या नफ़रत की और अल्लाह ही के लिए दिया और उसी के लिए इन्कार किया तो उसने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया।'' (अबुदाऊद–4681)

औलिया अल्लाह के दर्जात

औलिया अल्लाह के दो तबक़े हैं। ''एक तो दाहिने हाथ वाले और दूसरे जो सामने आगे बढ़ाये गये। ये आगे ही बढ़ाने के क़ाबिल हैं। ये दोनों तरह के लोग अल्लाह के क़रीबी है। इन्हें जन्नत के आराम देह बागों में जगह दी जायेगी। इस गिरोह में बहुत तो

अगले लोगों में से होंगे और थोड़े पिछलों में से भी।" (वाकिया–आयत–8 से 14) यही बात अल्लाह ने सूरह निसा, फ़ातिर और मुतफ़फ़्फ़िफ़ीन में भी बयान की है।

1. अबरारः– यानि दाहिने हाथ वाले वो लोग हैं जो फ़राइज़ अदाकरके अल्लाह का कुर्ब हासिल करते हैं। अल्लाह ने जो उन पर हराम किया है उससे बचते हैं। अपने–आप को नवाफ़िल का पाबन्द नहीं बनाते और न गैर ज़रूरी मुबाह चीज़ों से बाज़ रहते हैं।

2. मुक़र्रबीनः– ये वो लोग हैं जो फ़राइज अदा करने के बाद नवाफ़िल के ज़रिये अल्लाह के क़रीब होते हैं। वाजिबात और मुस्ताहिबात पर अमल करते हैं। हराम और मकरूहात से बचते हैं। अल्लाह की तमाम पसन्दीदा (प्यारी) बातों पर अमल करते हैं। जब हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! हमें उन लोगों के रास्ते पर चला जिन पर तूने इनाम किया तो यहां इनाम पाये लोगों से मुराद नबी, सिद्दीक़, शहीद और नेक (सालेह) लोग होते हैं। इर्शादे बारी तआला है–"बेशक शुक्र गुज़ार यानि फ़रमाबरदार लोग ऐसी शराब पियेंगे जिसमें काफ़ूर मिला होगा। जन्नत में जहां जायेंगे वहां उसे बहा ले जायेंगे ये वोह लोग है जो अपनी मन्नतें पूरी करते हैं क़यामत के दिन से डरते है। अल्लाह की मुहब्बत में मोहताज, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं और उन्हें बता भी देते हैं कि हम तुम्हें अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं। न तुम से कुछ बदला चाहिये और न शुक्र गुज़ारी।" (इन्सान–आयत–7 से 9) नबी सल्ल. ने फ़रमाया " जिसने किसी मोमिन की दुनियावी तकलीफ़ दूर की अल्लाह उसकी उख़रवी तकलीफ़ दूर करेगा। जिसने किसी गरीब की मदद की अल्लाह दुनिया और आखिरत में उस पर आसानी करेगा। जो किसी मुसलमान का ऐब छुपाएगा अल्लाह भी दुनिया और आखिरत में उसका ऐब छुपाएगा। अल्लाह उस वक़्त तक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक वह अपने भाई की मदद करता है। जो शख़्स इल्म हासिल करने के लिए सफ़र करता है अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है और जब कभी लोग किसी जगह जमा होकर कुरआन की तिलावत करते और उसे सीखते–सिखाते है तो उन पर अल्लाह की रहमत छा जाती हैं, फ़रिश्ते उन्हें घेरे में ले लेते है और अल्लाह फ़रिश्तों में उनका ज़िक्र खैर करता है।" (मुस्लिम–7082 जिल्द–6 सफ़ा–289)

(3) अफ़ज़ल तरीन औलिया अल्लाह

औलिया में सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत अम्बिया को हासिल है और अम्बिया में सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत उन्हें हासिल है जो रसूल हैं। सब रसूलों में ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा अलैहि. और मुहम्मद सल्ल. हैं। इनमें भी सबसे अफ़ज़ल इमामुल अम्बिया मुहम्मद सल्ल. है। कयामत के दिन जब अम्बिया अलैहि. इकध्ठे होंगे तो मुहम्मद सल्ल. ही उनके इमाम और खतीब होंगे और मक़ामे मेहमूद पर फ़ाइज़ होंगे। आप सल्ल. ही हम्द का झन्डा उठाने वाले, हौज़े कौसर के मालिक, क़यामत के दिन लोगों की शफ़ाअत करने वाले और साहिबे वसीला है। आप सल्ल. की ही उम्मत को खिताब करके अल्लाह ने फरमाया "तुम एक बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए निकाली गई है। इसलिए कि तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराईयों से रोकते हो।" (आले इमरान आयत–110)

अल्लाह के औलिया में बाद अम्बिया अलैहि. के सबसे अफ़ज़ल हज़रत अबुबकर सिद्दीक रजि. फिर उमर रजि. फिर उस्मान रजि. फिर अली रजि. फिर बकिया अशरा मुबश्शरा फिर अहले बदर फिर बैते रिज़वान वाले और फिर बकिया सभी सहाबा किराम रजि. है। मगर अफसोस! आज हमारे ज़हनों में जब औलिया अल्लाह का तसव्वुर आता है या ज़ुबानों पर उन का ज़िक्र आता है तो हमारी सोच अम्बिया तो क्या सहाबा किराम तक नहीं जा पाती। अगर जाती है तो उन कब्र वालों तक जिनकी कब्रो पर गुम्बद बने है। जहां उर्स होते है, कव्वालियां होती है। जहां अल्लाह को भूल कर उसकी मख़लूक़ को दाता, मुश्किल कुशा और गरीब नवाज़ समझ कर पुकारा जाता है। तौहीद का मज़ाक

उड़ाया जाता है, ईमान की धज्जियां बिखेरी जाती है। और इस्लाम की तौहीन की जाती है।

(4) औलिया को अम्बिया से अफज़ल समझना

एक गुमराह जमाअत ने खातिमुल अम्बिया पर कयास करते हुए खातिमुल औलिया को तमाम औलिया से अफजल करार दिया। जबकि अम्बिया तो ज़माने में औलिया से पहले आये हैं। और हर नबी अल्लाह का वली भी होता है फिर कैसे मुमकिन है कि उम्मती नबी से अफजल हो। खुद आप सल्ल. ने फरमाया "मैं औलादे आदम का सरदार हूं और यह कहना बतौर फख्र के नहीं।" (मुस्लिम–6209 जिल्द 6 सफा 9, अबुदाऊद–4673, इब्ने माजा–4308) रहे गैर नबी औलिया अल्लाह तो उनमे अफज़ल वह है जिसे रसूल सल्ल. की लाई हुई शरीयत का सबसे ज्यादा इल्म हो और जो आप. सल्ल. की इताअत (पैरवी) में सबसे आगे हो। जैस सहाबा किराम रजि. जो दीन को समझ ने और उसकी पैरवी में सबसे आगे हैं और उनमें भी इल्मी और अमली ऐतबार से अबुबकर रजि. को सबसे ज्यादा कमाल हासिल है और हम जानते हैं कि अबुबकर रजि. जैसे वली अल्लाह को भी किसी भी नबी से अफज़ल समझना सही नहीं है।

(5) वली अल्लाह सुन्नते रसूल सल्ल. का पाबन्द होता है

जिन लोगों तक मोहम्मद सल्ल. की रिसालत पहुंच चुकी हो वोह सिर्फ नबी सल्ल. की पैरवी करके ही अल्लाह के वली (दोस्त) बन सकते हैं। ऐसा शख्स बिना रसूल सल्ल. के तरीके पर चले अल्लाह का वली नहीं बन सकता। जो यह दावा करे कि रिसालत पहुंचने के बाद भी उसके पास अल्लाह तक पहुंचने की ऐसी राह मौजूद है जिसमें वोह रसूल सल्ल. का मोहताज नहीं है तो ऐसा शख्स वली अल्लाह तो दूर काफिर और बे दीन है। अगर अक़ीदा यह हो कि ज़ाहिर इल्म में तो मुहम्मद सल्ल. की जरूरत है मगर बातीनी इल्म में नहीं या इल्मे शरीयत में आपकी जरूरत है इल्मे हकीकत में नहीं तो ऐसा शख्स यहूद व नसारा से भी बदतर है, गुमराह है।

(6) ईमान और तक़वा वलायत की शर्त है

इस्लाम के इन्कारियों और मुनाफिकों में से कोई भी अल्लाह का वली नहीं हो सकता। ना ही ऐसा शख्स अल्लाह का वली हो सकता है जिसका ईमान और इबादत सहीं न हो। कई काहिन, जादूगर, मुश्रिक, पुजारी और अहले किताब ऐसे शौबदे दिखाते है कि लोग दंग रह जाए। लेकिन उनके ये शौबदे या करामते उनके अल्लाह का वली होने की दलील नहीं बन सकते और अगर कोई शख्स इसी बिना पर उन्हे अल्लाह का वली मानता है तो वह यहूद व नसारा से ज्यादा गुमराह है। क्योंकि दीन में असल ईमान है। इसी तरह कोई शख्स अल्लाह का वली होने का दावा करे और हालत उसकी यह हो कि वह न गुनाहों से बचता हो, न फराईज़ (नमाज़, रोज़ा वगैरह) की पाबन्दी से अदायगी करता हो बल्कि गुनाहो में घिरा रहता हो तो ऐसे शख्स को अल्लाह का वली (दोस्त) समझना जाईज़ नहीं है। हां अल्लाह का दोस्त नैक काम करके और बुराईयों से बचकर ही बना जा सकता है। इर्शादे बारी तआला है1 (अल्लाह के दोस्त वोह हैं) "जो ईमान लाए और परहेजगार रहें। (युनुस–63) और लोगों! हमने तुम सबको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। फिर तुम्हारी जाते (कबीले) और बिरादरियां ठहराई ताकि एक दूसरे को पहचान सको। (वरना) अल्लाह के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज़्ज़तदार वोह है जो मुत्तकी (परहेज़गार यानि अल्लाह से डरने वाला) है। (हुजुरात आयत–13) और हज्जतुलविदा के मौके पर आप सल्ल. ने फरमाया "किसी अरबी को अजमी (गैर अरबी) पर किसी अजमी को अरबी पर, काले को गौरे पर और गौरे को काले पर कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं है। अगर है तो सिर्फ तक़वें कि बुनियाद पर/तमाम लोग आदम (अलैहि.) की नस्ल से है और आदम मिट्टी से बनाये गये (मुसनद अहमद–सही)

(7) मासूम होना वलायत के लिये ज़रूरी नहीं

वली के लिए मासूम होना या गलती और भूल से पाक होना शर्त नहीं। बल्कि यह भी हो सकता है कि इल्मे शरियत की कुछ बातों का उसे इल्म ना हो और दीन के कुछ अहकाम में भी मुग़ालता हो। वह यह समझने लगे कि फलाह कामों का अल्लाह ने हुक्म दिया है। और फला बातों से मना किया है। हालांकि ऐसा ना हो। नई चीज़ों को देखकर उन्हे औलिया की करामात समझे जबकि वोह शैतानी हरकात हो। जो कम इल्मी की वजह से उसने समझी हो और उसे मालूम ही नां हो कि इस करीश्मे का तानाबाना शैतान से है। फिर भी ऐसा शख़्स अल्लाह का वली हो सकता है क्योंकि अल्लाह ने इस उम्मत के हक में खता और भूल को माफ कर दिया है। चूंकि वली अल्लाह के लिए गल्ती का इमकान मोजूद हैं इसलिए लोगो पर उसकी सब बातों पर ईमान लाना या यक़ीन करना जरूरी नहीं है अलबत्ता वली अगर नबी हो तो बात और है किसी वली के लिए यह जाइज् नहीं कि वोह उन बातों पर यकीन करे जो उसके दिल पर इल्का हों और उन बातों पर भरोसा करना जिन्हें वोह इल्हाम के तौर पर देखे यह भी जाइज् नहीं बल्कि उसके लिए ज़रूरी है कि वह उन सब बातों को मुहम्मद सल्ल. की लाई हुई शरीयत की कसौटी पर परखे। फिर जो मुआफ़िक़ हो उन्हें क़ुबूल कर ले और जो खिलाफ़ हो उसे छोड़ दे।

(8) अम्बिया की इताअत वाजिब है औलिया की नहीं

उम्मत का इस बात पर इज्माअ है कि नबी सल्ल. के सिवा हर शख़्स की बातें क़ुबूल और रद्द की जा सकती है। यही नबी और ग़ैरे नबी का फ़र्क़ है। औलिया के हर हुक्म की इताअत ज़रूरी नहीं बल्कि उनकी जो बातें किताबों–सुन्नत के मुताबिक हों वोह क़ाबिले क़ुबूल और जो मुखालिफ़ हों वोह रद्द की जायेंगी चाहे वोह कितना ही बड़ा वली अल्लाह क्यों न हों। कोई शख़्स अल्लाह का वली बनता ही तब है जब वह मुहम्मद सल्ल. की शरीयत पर ईमान लाकर उस पर अमल भी करें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ''वो लोग जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज कायम करते हैं। जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उसमे से अल्लाह की राह में खर्च करते है और आखिरत पर ईमान रखते हैं। यही लोग सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग कामयाबी और निजात पाने वाले हैं। (बकरा–आयत–136) और यह भी कि असल नैकी तो यह है कि अल्लाह, कयामत के दिन, फरिश्तों, आसमानी किताबों और अम्बिया पर ईमान लाया जाए। माल से मुहब्बत होने के बावजूद अल्लाह की राह में रिश्तेदारों, यतीमों, मोहताजों, मुसाफिरों और मांगने वालों पर खर्च करें। गुलामी वगैरह की कैद से लोगों को आजाद कराए। नमाज़ पढ़े और ज़कात देते रहें। वादों को पूरा करें। दुख, तंगदस्ती और लड़ाई के वक्त साबित कदम रहें। ये लोग हैं जो दावा ए इस्लाम में सच्चे हैं और परहेज़गार भी। (बकरा–आयत–177)

(9) नबी सल्ल. की पैरवी ही हक़ व बातिल का मीज़ान है

अल्लाह तआला के परहेज़गार लोग वही हैं जो उसके अहकाम की तामील करते है। मना की गई बातों से रूकते हैं और तक़दीर पर सब्र करते हैं। अल्लाह उनसे और वोह अल्लाह से मुहब्बत करते हैं। जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाएं और नबी सल्ल. की इत्तेबाअ करें। आपके बताये तरीके पर ज़िन्दगी गुज़ारें और अल्लाह से डरता रहे तो वोह अल्लाह का खुशनसीब दोस्त है और जो नबी सल्ल. के तरीके को छोड़कर किसी और के या अपने नफ्स के सुझाए तरीक़े पर ज़िन्दगी बसर करें तो ऐसा शख़्स अल्लाह का दुश्मन है। (अपने औलिया के बारे में इर्शादे बारी तआला है ''अल्लाह पर और कयामत के दिन पर ईमान रखने वालों क़ो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की मुखालिफत करने वालों से मुहब्बत रखते हुए हरगिज न पायेंगे। (मुजादला–आयत–22) इसलिए की ईमान वालों और अपने रब पर भरोसा करने वालों पर शैतान का ज़ोर नहीं चलता बल्कि शैतान का बस उन लोगों पर चलता है जो उसके साथी बनें और उसे अल्लाह का शरीक ठहराएं।'' (नहल–आयत–99–100)

(10) करामत की बुनियाद ईमान और तक्वा है

यह जरूरी है कि औलिया अल्लाह की करामात का ज़रिया ईमान व तक्वा हो। जिन करामात ज़रिया ईमान, नमाज़, किराअते कुरआन, अल्लाह का ज़िक्र, तहज्जुद और दुआ न हो कर शिर्किया आमाल जैसे मुर्दा या नज़रों से ओझल लोगों से दुआ, अल्लाह की नाफरमानी व गुनाह के काम, सांप या नापाक खून या कोई गंदी या नापाक चीज़ों का खाना हो या अजनबी औरतों या कम उम्र के लड़कों के साथ रक्स और सुरूर की महफिलें जमाना हों या साहिबे करामात को कुरआन पढ़ने या सुनने से नफरत हो या दिल जमई और शोक से पढ़ता व सुनता न हो बल्कि बाजे, सीटी और तालियों की आवाज़ उसे भाती हो तो ये सारे काम शैतानी हैं और ऐसा शख्स रहमान का नहीं बल्कि शैतान का दोस्त (वली) है। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है ''जो शख्स रहमान के जिक्र (याद) से गफलत करें हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर देते हैं। फिर वहीं उसका साथी रहता है। (जुखरूफ आयत-36)

(11) करामाते औलिया और शैतानी में फर्क़

इर्शादे बारी तआला है ''आप कह दीजिए की मेरे रब ने हराम किया है उन सब फहश बातों को जो एलानियां की जाएं या छिपा कर, गुनाह की हर बात को, नाहक किसी पर जुल्म करने को और इस बात को कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया जाए।'' (आराफ़-आयत-33) मालूम हुआ कि वोह करामते जो गैरूल्लाह की मदद या उन बातों के ज़रिये ज़ाहिर हो जिन्हे शैतान पसन्द करता है और अल्लाह ना पसन्द। तो ऐसी करामात रहमानी नहीं शैतानी है। कुछ लोग जो तालियों और मौसिकी की महफिले समाअ में आते हैं तो वहां उन पर शैतान उतरते हैं और उन लोगों से अजीबों गरीब हरकते करवाते हैं। कुछ लोग मुर्दो से हाजते मांगते हैं। कुछ के यहां शैतान किसी खास सूरत में ज़ाहिर हो कर कहता है कि मैं खिज्र (अलैहि.) हूं ओर उन्हें कुछ बाते भी बताता है। और कुछ कामों में उनकी मदद भी करता है। कुछ को हवा में तख्त और तख्त पर रोशनी नज़र आती है। वोह किसी को कहते हुए सुनते है कि मैं तुम्हारा रब हूं। अल्लाह के दीन की समझ रखने वाले तो जान लेते हैं कि यह शैतान है मगर दूसरे लोग शैतान के धोखे को करामात समझ बैठते है। किसी को जागते ही में यह ख्याल गुजरता है कि वोह किसी नबी, सिद्दीक या वली को देख रहे हैं जबकि वह शैतान होता है। कोई कब्र की जियारत के वक्त देखता है कि कब्र फटी और उसमे से मदफून शख्स बाहर निकल आया जबकि वह जिन्न होता है जो मय्यत का रूप धर लेता है। कोई देखता है कि कब्र से घोड़ा निकला और उसी में समा गया। यह भी शैतान होता है। यह सब और इस तरह के दूसरे सभी अहवाल शैतानी होते हैं जो कुरआन व सुन्नत के दायरे से निकल जाने वालों को पेश आते है।

(12) रहमानी और शैतानी औलिया का फर्क

इर्शादे बारी तआला है कि ''जो लोग अल्लाह के औलिया हैं कयामत के दिन न उन्हे डर होगा और न गम। ये वोह लोग है जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे। इनके लिए दुनिया की जिन्दगी में भी खुशी है और आखिरत में भी। (युनुस आयत-62 से 64) और ईमान वालों का कार साज़ तो खुद अल्लाह है जो उन्हे अन्धेरों से निकाल कर रोशनी में लाता है और काफिरों के दोस्त शैतान है जो रोशनी से निकाल कर अन्धेरों में ले जाते है। (बकरा-आयत-257) ''मोमीनों! तुम्हारा दोस्त अल्लाह है, उसका रसूल है और ईमान वाले लोग हैं जो नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं। (माईदा-आयत-55) और ईमान वालों और अल्लाह पर भरोसा रखने वालों पर शैतान का ज़ोर नहीं चलता। वह उन्ही पर हावी होता है जो उसे दोस्त बनाते है और अल्लाह के साथ शिर्क करते है। (नहल-आयत-99-100) और ''जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम (अलैहि.) को सज्दा करों तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा किया और इब्लीस जिन्नों में से था। उसने अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी की। क्या फिर भी तुम

उसे और उसकी औलाद को मुझे छोड़कर अपना दोस्त बनाते हो? (कहफ़–आयत–50) और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनायेगा। वह साफ नुकसान उठाने वालों में होगा। (निसा–आयत–119) और हमने शैतानों को उन्ही लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते और जब कोई बुरा काम करते है तो कहते है कि हमने अपने बाप दादा को इसी तरीके पर पाया है और अल्लाह ने भी यही बताया है। आप कह दीजिए की अल्लाह फ़हश (गंदी) बातों की तालीम नहीं देता। मेरे रब ने इंसाफ करने का हुक्म दिया है और यह कि अल्लाह की इबादत हो इखलास के साथ। जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना दोस्त बनाया है वोह यह समझते है कि वोह सीधे रास्ते पर है। (आराफ़–आयत–27 से 30) बेशक! ईमान वाले कामयाब हो गये जो आजीज़ी और इन्कसारी से नमाज़ अदा करते हैं, बैकार और फिजूल बातों से दूर रहते है।जो अपनी ज़कात अदा करते हैं। अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करतें हें मगर अपनी बीवियों और लौड़ियों से और इसके अलावा से अपनी हाजत पूरी नहीं करते। अमानतों और वादों का ध्यान रखते हैं और अपनी नमाज़ों का ख़्याल रखते है। यही लोग वारिस हैं उन जन्नतों के जो घनी छांव के नीचे फ़िरदौस की जन्नतें होंगी। ये लोग वहां हमेशा रहेंगे।" (मुअमिनून–आयत–1 से 10)

इमरान बिन हसीन रज़ि. बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया "मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वो है जो मेरे ज़माने में हैं। फिर वो जो इनके बाद आयेंगे और फिर वो जो उनके बाद होंगे।" (अबुदाऊद–4657, बुख़ारी–2651)

यानि सहाबा रज़ि., ताबईन और तबअ ताबईन रह. इस उम्मत के बेहतरीन लोग हैं। अबु सईद खुदरी रज़ि. का बयान है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया "मेरे सहाबा को बुरा मत कहो। क़सम उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर तुम में से कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना भी खर्च कर डाले तो वह उनके एक मुद या आधे मुद गल्ले (अनाज)को भी नहीं पहुच सकता। (बुख़ारी–3673, अबुदाऊद–4658)

इन दो अहादीसे रसूल सल्ल. से मालूम हुआ कि सहाबा रज़ि. ताबईन और तबअ ताबईन रह. इस उम्मत के सबसे बेहतर औलिया अल्लाह है। मगर क्या किया जाए कुछ लोगों ने उम्मते मुहम्मदिया सल्ल. के अफ़ज़ल तरीन औलिया को तो भुला दिया और ऐसे लोगों को अल्लाह का औलिया मान बैठे जिन के बारे में कुरआन व सुन्नत की कोई दलील नहीं हैं। सिवाए इसके कि फ़ला अल्लाह का वली है, और वह यह बात बाप–दादा से या लोगों से सुनते आये हैं। फिर इतने पर ही बस नहीं किया बल्कि जाने अन्जाने अपने बनाये औलिया के साथ अल्लाह का सा मामला करने लगे। अल्लाह हम सभी को दीन की सही समझ अता करे।

यूं औलिया अल्लाह किसी खास मखलूक का नाम नहीं है और न ही इसके लिए किसी करामत का जाहिर होना जरूरी है। बल्कि हर वोह शख्स अल्लाह का वली है जो अल्लाह पर ईमान लाए, नबी सल्ल. के बताए तरीके पर ज़िन्दगी गुज़ारे और परहेज़गार रहे। हां इस दोस्ती के दर्जात मुख्तलिफ हो सकते हैं इसलिए की जिसका जितना ज्यादा मज़बूत ईमान होगा और जितनी ज़्यादा शरीयत की पैरवी करेगा और गुनाहों से बचेगा वो उतना ही करीबी अल्लाह का दोस्त होगा। और कुरआन व सुन्नते रसूल सल्ल. के खिलाफ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले लोगोंका दोस्त शैतान है ऐसे लोग शैतानी औलिया है।

अल्लाह हम सभी को अपने दोस्तों में शुमार करें। हमारे गुनाहों को माफ फरमाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

माख़ूज़
औलिया ए हक व बातिल
अज़–शैख इब्ने तीमिया रह.

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
Email : saeed.tonk@gmail.com

09887239649, 09214836639